

Kavya

Date: 10/02/2022 Page 1

Semester II (M.A.)

Paper 5, Cognitive Psychology

Page No.:
Date:

youv

Topic - Types of thinking

चिन्तन के प्रकार के होते हैं

- (1) आत्मविमोही चिन्तन (Autistic thinking)
- (2) वास्तविक चिन्तन (Realistic thinking)

आत्मविमोही चिन्तन - यह चिन्तन मुख्य रूप से व्यक्तिगत आवश्यकताओं, इच्छाओं के साथ इसकी तात्कालिक वास्तविक चिन्तन का संबंध नहीं होता है बल्कि व्यक्तिगत परिस्थितियों की भावों से रहता है अतः स्पष्ट है कि आत्मविमोही चिन्तन व्यक्ति की निजी आवश्यकताओं, इच्छाओं, भावों आदि से प्रेरित होता है तथा इसमें संलग्न क्रियाओं का उद्देश्य आत्म-संतोष (Self satisfaction) प्राप्त करना होता है। इसमें होने वाली क्रियाएँ वास्तविकता से संबंधित नहीं होती हैं परन्तु वास्तविक चिन्तन में क्रियाएँ वास्तविक परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाली वास्तविक समस्याओं से प्रभावित होकर प्रेरित होती हैं जिससे समस्याओं की संज्ञा, समस्या का समाधान होता है, यहाँ चिन्तन उत्पादक स्वरूप का होता है जो प्रेरित (Motivated) होता होता है। इस दौरान प्रकाश के चिन्तन से व्यक्ति का कोई न कोई उद्देश्य नहीं प्राप्त होता है बल्कि प्रकाश के चिन्तन से व्यक्ति को

आत्मविमोही चिन्तन (Autistic thinking).
 इस प्रकार के चिन्तन में व्यक्ति केवल
 काल्पनिक विचारों में रवोया रहता है
 स्वप्न कल्पना (fantasy), इच्छापूर्णा चिन्तन
 (wishful thinking), दिवा स्वप्न
 (day dreaming) आदि आत्मविमोही
 चिन्तन का रूप है जैसे स्वप्न में
 व्यक्ति ऐसी दृश्याओं के बारे में जिला
 संबंध व्यक्तित्वगत पृष्ठों के साथ रहता है
 व्यक्ति के दिमाग में उत्पन्न होनेवाली
 कोई महत्वपूर्ण विचार सबसे पहले स्वप्न
 के माध्यम से मिलता है जिसका प्रत्यक्ष
 व्यक्ति जागृत अवस्था में करता है।
 काल्पनिक स्वरूप के चिन्तन में
 विचार व्यक्ति के दैनिक जीवन की
 आवश्यकताओं से नहीं रहता है, जैसे
 दिवा स्वप्न (day dreaming) व्यक्ति के एक
 निजी एवं काल्पनिक कक्ष में होती है जिसमें
 व्यक्ति स्वयं महत्त्व अपने को वास्तविकता
 से परे सफल देगा, खुशी एवं संतुष्टि देगा
 की कल्पना करता है जो व्यक्ति की
 असंतुष्ट इच्छाओं की पूर्ति करता है
 परन्तु जब इस प्रकार की दिवा स्वप्न
 इच्छाओं और नियमित स्वरूप का होता है
 तो व्यक्ति संगोविभूति (displacement)
 का शिकार हो जाता है उसमें असामान्यता
 के लक्षण दिखने लगता है

दिव्यस्वप्न की यह अवस्था व्यक्ति के लिए धनिकारक हो जाता है लेकिन सामान्य स्तर पर ऐसी कल्पनाओं से समझोपमोगी एवं लाभप्रद होती है वैज्ञानिकों के लिए यह बहुत ही लाभप्रद होती है वे इन कल्पनाओं को वास्तविक स्वरूप प्रदान करते हैं सदैव कार्यशील रहते हैं आज जो आविष्कार है वह उन्हीं वैज्ञानिकों की देन है जो दिव्यस्वप्न के माध्यम से वास्तविक स्वरूप प्रदान किया है आज जो भी कलकार खोजे, चिकित्सा, विज्ञान शिक्षा, उद्योग धंधे आदि का आविष्कार रचनात्मक कल्पनाओं का ही प्रतिफल है।

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में हम यह कह सकते हैं कि आत्मविश्लेषी चिन्तन एक उच्चतम मानवीय प्रक्रिया है जिसका संबंध व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं आन्तरिक वातावरण के साथ अभिभोग संबंधी समस्याओं के साथ रहता है। जिस आत्मसंतुष्टि के लिए सोचना या विचारना कहा जा सकता है।

(2) वास्तविक चिन्तन (Realistic thinking)

वास्तविक चिन्तन व्यक्ति के वास्तविक जीवन की समस्याओं से संबंधित होता है व्यक्ति अपने अस्तित्व अथवा जीविकोपार्जन जैसी वास्तविक पक्षों से संबंध रखता है। समस्याओं की समाधान की आवश्यकता से प्रेरित होकर सोचने की क्रिया करता है उसे तर्क (reasoning) अथवा सप्रमाण

विचार का (Positive thinking) है।
चिन्तन के इस प्रकार के में तीन प्रकार
की मानसिक क्रिया सम्मिलित रहती है।

(i) निगमनात्मक चिन्तन (Reductive thinking)
- इस प्रकार के चिन्तन में व्यक्ति उपलब्ध
सामग्री की जाँच-पड़ताल का निष्कर्ष या
पहुँचता है जिससे वह समस्या का निश्चित
कारण से कारण से प्रभाव लगाया जा सकता है चिन्तन
की बहुत स्थिति को तर्कना (reasoning) कर
ती रहता है जिससे चिन्तक अपने पूर्व ज्ञान
उपलब्ध प्रदत्त (data) आदि को बतलाते समय में
किसी समस्या के अनुक्रम को क्रम में मानसिक
प्रमाण करता है।

(ii) आगमनात्मक चिन्तन (Inductive thinking)

इस तरह की स्थिति में चिन्तक या व्यक्ति
के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह कोई
नया उपाय खोजे, और जब व्यक्ति या चिन्तक जब
किसी नये विचार या निष्कर्ष को देखता है तब वह
विचार या निष्कर्ष पूर्व कल्पना होती है जो समस्या
समाधान को सुनिश्चित करती है।

(iii) मूल्योन्मुख चिन्तन (Evaluative thinking) - जब कि

व्यक्ति या चिन्तक के मन में एक से अधिक विचार
हैं तथा समस्या का सही समाधान करने में भी एक
अधिक विचार उपयुक्त है लकते हैं चिन्तक सौ प्रविचार
उन सभी संभावित उपायों का मूल्योन्मुख करता है कि
वह विभिन्न विचारों में उपयुक्त, कुशल या संभावित
आदि या विचार करता है।